

DPN 6447

Title : गंगा सहस्रनाम स्तोत्र / GANGĀ SAHASRANĀMA STOTRA

Run. No. 7172

Cat. No. 100

Micro. No.

Subject Stotra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 21.5 x 9

Folios 25 Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon : 1. इति स्कन्दपुराणे काशीखण्डे गंगासहस्रनामैकोनत्रिंशो
ध्यायः समाप्तः ॥ 2. इति श्रीगौरीसूक्तः समाप्तः ॥

0 cms.

5

10

15

20

10

5

0

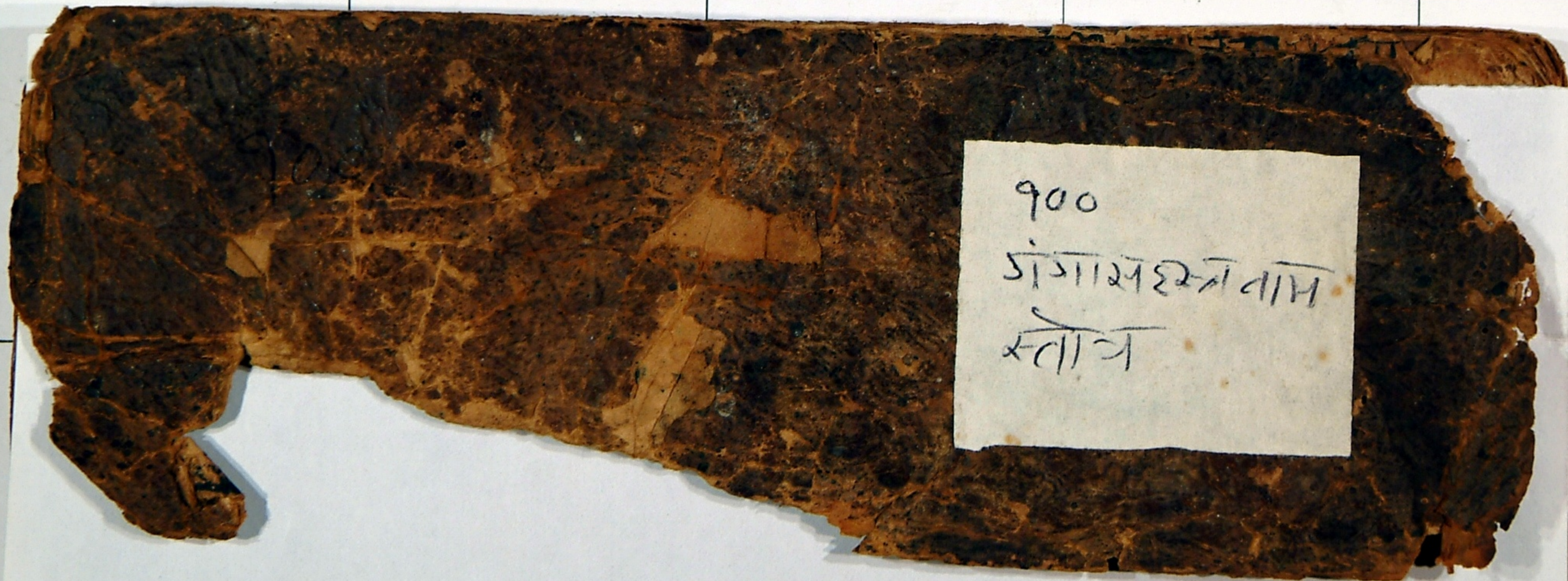
cmts.

5

10

15

20



१००

सिंहासनावली

सूची

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मा कालं विदस्य सुत निजं कार्यं शान्तिं न कालं दम

धनं। न निद्रय... मनसि रुक्मिणीं वदाले र हयन कर्ष्य न कालिदा
 संधि रवा भावना रुमिदिना नृप न सहायां न ला निवेव न र विवेव
 विकसत्या ॥ १ ॥ मित्रमार्थी तथा नीति धर्म कार्य धर्म प्रता। श्री गी वि
 दान। धा लेवा तान्न वल मिदं क सा ॥ २ ॥ मित्र सुक्त नाया लि पन य वल
 लेखि व धन नी धन कार्य धा दिज मा द न ध य व ता। ध म्ना धा मे धा धि वा
 न। गृह्य री रु ति रि रु न य व ति रि रु र्क क था रि व ध। विद्या ही न सि की
 न स न सक ल ली ले न क या द धा ॥ ३ ॥ अर्थि ल वि म कि ता नि य न न का
 मा गु ना धि न ल धा की रि म स ग न ४ प नि रु व द क्षा न्य धा ध न ति। नि ५

स्वा व व न म न्म ना वि क ल तां। धा का वि ल ४ स ग र्थ द व ग पि य तां द न्ना द
 न व धा ४ धा प्रा ति क द म रु ॥ ४ ॥ नी ति रु मि रु जां न ति रु व व तां। धी न
 ग ना ना धि ति म्ये द्धे धा ४ धि धा वा गृ ह्म य क वि ता व धि धा सा धा गि मी ल
 व धि व य ध ४ म्म ति ४ म्म स म्मि। नि दि ज सा द मा धा क म्म द वि धा गृ हा
 ध म व तां स्वा स म्म तां म रु न ॥ ५ ॥ धर्म यो ग व वि ल ४ स वि व म ति ग
 ति ला व नी या स ध व रु या ला वा न व ति व न व न य न म्म धु ल वी क
 ती र्थ ध म्म यो ना ग रा धी मृ द य न व न सो या। ध नी यो व का म्म मा ला
 य ले न न का न व धि न सि य न ४ धा पि ना ये द धी य ४ ॥ ६ ॥ का र्थ ध

[illegible]

वे १ दा १
 स्वल्पधनस्य संचितम् सदृशस्य वा कुतश्चन ॥ सन्निभस्य महाधनस्य निध
 नविश्या कुलस्यैकता सुजाया धनमन्त्रतन्त्रुणचय ॥ न विवर्धकावन
 ॥ ९ ॥ विष्णुदानसंस्मृतिर्या किं कथ्यते ॥ १० ॥ मानीदुनिधा गृहीतया
 ध ॥ दायन ॥ सुखी यत्र व ॥ ११ ॥ दानं तीर्थं श्रितं ॥ नन्दः स विवर्धयिष्य ॥
 कुलं तु वाम्भवे ॥ यमान्कीर्तिना ॥ दानं दानं दानं सखि य ॥ किं मय न लभ्य
 ह्यर्धं कुरुते ॥ १० ॥ उल्लानान् प्रमिश्रयन् कसमि तान् विचनति
 गून् वदयन् धार्दुमान् नमयन् नानात्समदयन् विष्णुं यन् संहिता
 न्तापान् कर्त्तुं किं ना बोहि त्रिधमेयन् म्लानां भद्रं सचयन् मालाका

वेत्ता

५१९

5

यः दत्तं कः ४ श्यायना विकल हल । स्नान स्य दव स निभा । महायुक्त नभा
 मभ ॥ ११ ॥ शिव तकाय गानाय । विष्णु तकाय नायव । ध्याल वेत्ता ॥
 सिकाय गर्त वास मम कव ॥ १२ ॥ कभनीय न वा न्यस्य । कस्य चित्क न वि
 केचित् ॥ १३ ॥ दन रुस्य पत्र म । महायात कनाशन ॥ १४ ॥ महा धियस्क न
 यत्न सताने ध करे पत्र । धन दीप्री निजन की । शिव सक्त व सक्त नि ॥ १५ ॥
 नाम्नां सुदुर्ग गाय ४ सुव नार्जय । (ग) रुत । ज्ञाना न पित्र मर्जय । वदोप
 निषदा सम ॥ १६ ॥ स्कन्द उवाच ॥ ॐ नमो शिवाय ॥ ॐ का न नृपि त्थ ॥ ३३ ॥
 १ जव नार्जय पत्रेन । मो नि ना न च के दि ना । धु चि सक्त व ॥ ३४ ॥ विना सस्य द्वा क न भव व ॥ १७ ॥

३३ ला ३ नना मृत मवा । अथ दाना रुया ३ (ग) का । ३ ल क न न्दा ३ मृता ३
 मला ॥ १८ ॥ अनाथ वत्सला ३ मद्या । ३ प्रीयानि ३ मृत पदा । अथ कल
 न । ३ ३ द्वाया ३ नव चिन्ता ३ य नार्जिता ॥ १९ ॥ अनाथ नाथ ३ लीलाय
 सिद्धि दा ३ नम व चिन्ता । अति मादि युष्मा धा ना । ३ य गप्ता ली कला निधी
 ॥ २० ॥ अविश्व ३ कि न न वा ३ रुत नृया ३ य दानि ली । अदि जै नो सुता
 ३ ३ य ग सिद्धि पदा । यता ॥ २० ॥ अद् ३ कि न सदा ३ न न गी थ
 ३ मृता दका । अनन्त महिमा ३ पाना ३ न न सो र्वा य दानि दा ॥ २१ ॥ अ

(शषदेवतामूर्ति नद्यानाश्मृतनृपिणी। अविद्याजालशमनीकर
 पुनरुत्पत्तिप्रदा॥ २२॥ अ(शषविष्णुसहस्रनामविष्णुविष्णुविष्णुविष्णु
 अज्ञानमिमिमिन्नानि ननयप्रहयनायका॥ २३॥ अस्मिन्नामाश्नव
 शायश्च, इतकसा नाश्कलकिनी। आशायदानन्यवली, त्वापनारिष
 नाशिनी॥ २४॥ आशयर्मूर्तिनायुष्मा, कायायाह्वयोसविता। आः
 याविष्णुसविद्याख्या, त्वानंदोष्मासुदायिनी॥ २५॥ आलस्यप्रायदं
 हन्ती, अज्ञानदामृतवाहिणी॥ २६॥ नावतीसदाशीला, त्विहमूर्तिरुत्पदा
 ली।

॥ २६॥ ॐ तिहासुधनीत्यार्थः त्विहामूर्तिरुत्पदा। ॐ अशीलस
 मीश्वरः, त्विहोदयनिवन्दिता॥ २७॥ ॐ लालेकानमालदाः
 त्विदिनानस्यमन्दिना। ॐ दिदिनालिससया त्विध्वनीध्वनवलला
 ॥ २८॥ ॐ तिलीतिहयग्याव, त्विध्वनीयवनिग्रहनाडल्लक्षणाकिन्न
 ल्लक्षणा, प्रयमधुलधनिनी॥ २९॥ उदिताम्वनमाश्रितानगनाक
 विहानिनी॥ उश्वनायलाकुम्भा, उपलब्धवनधडगा॥ ३०॥ उदन्त
 ल्लक्षितिसहान, कानिध्वनिवाविनी ॥ ३१॥ (श्या, दानासाहयवधि

ली। उदं गच्छा प्रमनी. अम्र नमि सुता प्रिया। उत्पत्तिं सिद्धिं तिसंका
नं। का निष्पत्तिं यनि चानि। ३१। उदं वदं लज्जं धना जावती वामिमानि
नी॥ ३१॥ उदं प्रतः प्रिया ज्ञा ज्ञा अमि लार्ध गति प्रदा॥ मपि वन्द
मुत दिष्टि सत्तयय विनाशिनी॥ ३२॥ अतम नदि दापी व अक्क
दूया मरु प्रिया। अतमार्जव रुदो वि अतमार्जव दहिनी॥ ३३॥
उधिता खिल धर्मा थि ल्विके कामु गदायिनी। उधनी यस्तु ता वद्धा ल्व
जिता। एष पातका॥ ३४॥ उधेयु र्या अति का अन्व वीयति। उज्ज्वि
दं न्ययं

आवधी कृत्त मागा दो दन दायिनी॥ ३५॥ उदं नृ नान्न ल्यदा वी ल्वो
वर्धं रुव नागिनी॥ उदार्थ लक्ष्मी प्रोय ल्वो ल्वी श्री श्री मय नृ पिनी॥ ३६॥
अम्र नाध वरुणी स्वर्णी वनमाला स्मृ जदना। अन्विकाम् मरु या नि नः
ध्यादा श्व कदा निनी॥ ३७॥ अउमाला अंशु मनी ल्व १ गी कन मउ
नना। अन्वता मिस रु ल्व धू नजि ना अंजना वनी॥ ३८॥ कल्याण का निनी
काम्या कमला ल्व गन्धिनी॥ कमदनी कमलिनी कान्ति ४ कल्पि न दायि
नी॥ ३९॥ काश्चि नाख्या काम धन ४ को लि कर्त्तु गी नागिनी। कदु धी दक

उरुला कर्मवन्धविह्वलिनी ॥ ४० ॥ कमला की कुमलना कलननयन
 यति। कनूषा डाव कल्याणी कलिकलमपनाशिनी ॥ ४१ ॥ कामरूपा क्रिया
 गकि ४ कमला ललमालिनी। कूटकु कनूषा काका कुर्मयाना कलावती
 ॥ ४२ ॥ कमला कललनिका काली कलखवे त्रिणी। कमनी यरुला कला क
 पदिस कयवना ॥ ४३ ॥ कालकूट पुष्पमनी कदम्ब कसुम प्रिया। का
 लिन्दी कलीलनिका कल कलालमालिका ॥ ४४ ॥ कानला कणय क
 ड्डक ड्डततयव सुला। खड्गिनी खड्ग धनाहा खग खलु न्दध निः
 दा

वि ३
 ॥ ४५ ॥ खेखल गमिनी खल खलु न्दतिल कप्रिया। खचनी खच
 नी वंशा खानि ४ खानि प्रदायिनी ॥ ४६ ॥ खलु तर्ग गाधोया खलव
 दिना शिनी। खाने न कन्द सन्दाहा खल खल मेश्वरिनी ॥ ४७ ॥ खन
 सकाय डमनी खलि ४ पीयूष पाथसी। गंगा गन्धवती। गोत्री गन्धर्वन
 गन प्रिया ॥ ४८ ॥ गङ्गा नाग्री। गुणमयी गगन का गति प्रिया। गगना
 धीविका गीता गयवयव निरुता ॥ ४९ ॥ गङ्गात्री गङ्गा मनी गति प्र
 दगति प्रदा। गमनी युक् विद्या। गो। गङ्गा गगन गमिनी ॥ ५० ॥

१५
 १०
 वृजिना, वनिता (गणमधुला) ॥ ५० ॥ कृदिता तिलया धोया, कृमः
 धीकृल हा निगी ॥ कृन्ति विरिष पनला, कृदिता (गणवधना) ॥ ५१ ॥ कृ
 निता मृतधनोया, कृन्तिना धुन्दगमिनी ॥ कृगी वृगममना लोया, कृ
 टीकन निजामृता ॥ ५२ ॥ जाकृवी अजगलमाना, जया जया लवीचि
 का ॥ जया जना दनपीता, रुषली या जगदिता ॥ ५३ ॥ जीवन् जीव
 न प्राण, जग अक्ष जगलसी ॥ जीवजी वाउलुनिका, जमि जमनि
 बहिणी ॥ ५४ ॥ जाय विधिसुनकनी जगया निजला विला जगदानन्द
 जननी जलजा जलजकृष्ण ॥ ५५ ॥ जनला च नयी यूषा, जटातट वि

हा निगी ॥ जय नीजं जय कंधी ॥ जनि तत्त्वान विग्रहा ॥ ५६ ॥ अक्ष
 नी वाय कृगला, जलमाल जलावृता ॥ सिटी हावन्ना जिकान, का
 विहीममना वगी ॥ ५७ ॥ टीकिता तिलया गाला, टीकिनी दिवा
 टना ॥ टीकान नृत्य कलोला ॥ टीकनीयमहा गटा ॥ ५८ ॥ जीवन प्रवला
 जीनाना जहं सकला कला ॥ जमजुम नरुस व, जमना कमलाद्रक
 ॥ ५९ ॥ ठोकिता (गणनिर्वाह), टकानादवलकुला ॥ टीचि विग्रहा
 जननी, टलरु लिंगयाटका ॥ ६० ॥ तय्यही तीर्थताथसि, प्रियथः
 विविध गत्री ॥ यिला अगम फीता यही, जलाय च विवदिता ॥ ६१ ॥

नाव विनयसंरुहं निजावल विवादेनी। विनय तात्रलीतात्रा तात्राय
 निकनायिता ॥ १२ ॥ जे लाक पावनी उच्छा उच्छिदा उच्छिन्न विधी। ह
 कंकणीता र्थमाता विविक्कमयदाह वा ॥ १३ ॥ तथा मयी तथा नृपा
 नमस्तु भक्तलयदा जे लाक पाविनी ह पिस्तु मिहलु लव नृ विधी ॥ १४
 ॥ जे लाक सुन्दरी उया उया नीतयदप्रदा जे लाक लक्ष्मी मिपदी
 नक्षत्रातिमित्र वदिका ॥ १५ ॥ न जागर्तय ४ सात्रा विपूना विनि
 नाय हा जयी स्व नृ विधी नली नयनी गजली निरुता ॥ १६ ॥ न निरु
 निमिजामिगै नयिता ॥ १७ ॥ प्रपूर्वजा जला विनहिता तीव्र पावक

लगन नयाग ॥ १८ ॥ दानिद्रा दमनी दक्षा दक्षु दक्ष विद्यमथुना
 दीक्षा वली दना वाया द्राक्षामध्वन वा निरुत ॥ १९ ॥ दक्षिता नक
 कुरुका दक्षदक्ष यद ४ खद न दैन्यद गूद निगघीय दान वा निप
 दात्रजा ॥ २० ॥ दक्षु गूक विषघ्नीय दानिमा घोष सुन नि ४ क्रताय
 वक्षमच्छना दक्षो नाय विद्या निनी ॥ २१ ॥ दमयम दक्ष दवमागाय
 वली कपद निनी दवदव प्रिया दवी दिक्क लक्ष ददायिनी ॥ २२
 ॥ दीर्घा ४ कानिनी दाघा दानि दूषण वज्रिना दक्ष विवाहिनी

दाक्रा, दिव्या, दिव्य गति प्रदा ॥ ७२ ॥ अथ नदी दीन नदी नदी दिदिदह
 निवाहिनी। प्राचीय सीमा चरु कु, दिन यात कसन्त नि ॥ ७३ ॥ अथ
 दश। कनवनी, दग्गमा दववस्तुता। दवर्ह श्रीदविगमहा, दयाधनाः
 धनी दयावती ॥ ७४ ॥ दनाधषादि विगमक्रा, दयाधना दयावती। द
 नासुदा दानशीला, प्राविनी वृहिसुता ॥ ७५ ॥ देत्य दानवस्य गुद्धि
 कछी दवदि दानिनी। दानमाना दयामाना, दवास्तु निविगमहिनी
 ॥ ७६ ॥ दददददद लप्राकि, दवरा दवदिना। दीधविना दी

र्वदृष्टि, दीपभायादनालता ॥ ७१ ॥ दष्टयि। प्रीदधुनीति, दष्ट
 दष्टधनार्चिता। दनादनघ्नीदावार्चि, दष्टदष्टकंधव वि० ॥ ७२
 ॥ कीनसंतापमनी, दायीदवधवेनिता। दत्रीचिदानागना, दा
 नादानकजनयिया ॥ ७३ ॥ दानिताद्विवटीदग्नी, दन्मनध्रुवाः
 निनी। धर्मद्विधाधर्मधना, धनद्विधाधुनिद्विधा ॥ ७४ ॥ धनदानद्वि
 लस्यग, धर्मकामार्थमादादा। धर्माभिवाहिनीध्रुवा, धानीधर्मः
 विद्वत्पत्नी ॥ ७५ ॥ धर्मिणीधर्मणीलाच, धनिकाटिकनावनाध्याह

पावकनाथ्या, पावनी इत कलमया ॥ १५ ॥ धर्मधर्मनाधर्म
नाधनवद्विती ॥ धर्मधर्मगुण केंपी, धर्मवकसमनि
धर्मधर्मगुण, धनधन्यासमृद्धि कतू ॥ धर्मल
वधर्मिणी ॥ १६ ॥ ध्यानमयस्वरूपाव, धान
दिजटासक, धन्या धाधननावती ॥ १७ ॥
नन्दिनी नून कातका ॥ निषिद्धवि
यकाणिनी ॥ १८ ॥ नरा इत्यवनी नू ॥

हावतीललाहिनमूर्धना। नदिहमिनगसु
 १०५॥ नि४३॥ हाताकतदी। निनयाधुवदीदो
 पृथतनेमिणी॥ १०६॥ पृ४४॥ पृ४५॥ हापृ४६॥ प्र
 जतती। प्रा४६॥ प्रा४७॥ प्रिणी॥ १०७॥ यमासपना
 यनापनरुलपाफि४५॥ पावतीवयस्त्रिनी॥ १०८॥
 हापातीयना। यनापतितापीना। प्र४८॥ वाकनरुपिणी॥
 सम्यना। पृ४९॥ पा४९॥ विनाभिनी॥ यनमासस्रुपाव। यनवृक्षय

[illegible]

वृजविभावना। रुलिननामदाकृता रुलित्वाकविरूषनी॥११॥
 रुनकलपुत्रनेना॥ रुनकेनवगन्धिनी। रुलिलाकृदधनाहा
 रुदचाटियाटका॥११॥ रुलिनसुदसलिला रुटयथाजलाविला
 । विष्णुमाताविचे (स्थणा) विष्णु वि (स्थे) स्थनयिया॥११॥ वक्रस्थावक्र
 कडाक्लि वक्रस्था विमलादका। विहावनीचविनजा, विकाना नक
 यिष्टया॥११॥ विष्णुमिश्र विष्णुयदी वेष्णु वि वेष्णु वयिया। विष्णुया कः
 प्रिकत्री विरूति विष्णुनामस्वी॥११॥ विद्याभवदधी वेद्या, वेदाका

ये ७

य २

प्रनससवा। विद्यावगवती वंशा, हृत्ती वक्रवादिनी॥१२०॥ वनदाविष
 कृष्णव, वेनिष्ठाव वि (स्थ) धनी विद्या धनी वि (स्थ) काच, वट्टु निषवि
 ना॥१२१॥ वरुको देवलवती, आसस्त्रविदधयिमा। वाली वदवती
 विरु, वक्रविद्या ननलिनी॥१२२॥ वक्राधु काटि या कम्बु वरु
 याय रुविनी॥ वक्राधु विष्णु नयाच, वदिविरु व वदिनी॥१२३॥
 विलासि सुखदा व (स्थ) यायिनी वरु या नलि॥ वरु या कम्बोलि निल
 या, विष्णुनालि पद जिनी॥१२४॥ विनीता विनगावध, ननया विनय

चि ता। विर्यं च वायु कृष्णला. व लू शु नि वि च कृष्ण॥ १२॥ वर्व स्क
नी वल नी वलामूलिन कल्पया। वि यो या वि गता गं का. वि कल्पय नि
वर्जिता॥ १२॥ वृष्टि कर्त्तृ वृष्टि जला. वि धि वि वि द्धु न्न व ध ना। व न नू या वि ३
वि लि नू या. व रु वि द्ध वि ना न कृ त्॥ १२॥ व सु ध ना व सु म नी. वि ना
नी वि का व सु ४। वि रु या वि श्व वी जा चै वा म क वी व य पु दा॥ १२॥ वृ ष्ठा म
ना वि य द्धी च. वि ष्ठा ना म्म्य शु मा लि नी। रु द्धा रा ग व ती रु द्धा. रा वा नी रु न
रा वि नी॥ १२॥ रु न धा नी रु य द्धा रु क दा वि द्धा दा वि णी। रु कि म्

कि य दा रु ण। रु क स्व र्म य व र्ज दा॥ १३॥ रा गि न थी रा न म नी. रा र्थ रा
ग व नी रु नि ४। रु व यि या रु व द्ध वी रु नि दा रु नि रु व ण॥ १३॥ रा
ल ला व न रा व का. रु न रु व रु व रु ४। जो कि ष्ठा न य ण म नी. रि न्न वु का
लु म लु या॥ १३॥ रु वि दा रु कि सु ल रा. रा म्म व द्ध वि (ग व ना। रु जि
ना य द्ध व क ला. रु ष्ठा रा रु सु ख य दा॥ १३॥ रु कृ णी या रु कृ मा न. रु
वा रा व स च नू यि नी। म द्धा कि नी म द्धा न द्धा. मा ना म् कि न व णि नी॥ १३॥
म हा द या म ध म नी. म हा य ष्ठा म् दा क वी। म्नि म्नु ना म द्धा नी म हा

मरुक्कनी। यामिनी गहिमाक्षदा, यगधर्मिविवर्जिता ॥ १४३ ॥ नव
मीनतिष्ठदम्या, नलग्ननिमावती। नलाकनधमया, नसुक्रानसु
द्विती ॥ १४४ ॥ नल्लयासादगर्तचि, नमलीयतनद्विती। नल्लार्वा
नूद्वनमली, नागध्वविनाशिनी ॥ १४५ ॥ नमानामानम्यत्रया, ना
गिजीवुद्विती। नद्विकृष्टाचिनी, नद्या, नचिनागगहानिती ॥ १
४६ ॥ नाजहंसा, नवचती, नाजल्लालनाजिका। नामलीयेकनया
स्वाव, नजानी, नागध्वविती ॥ १४७ ॥ नाकानकार्तिनी, मनी, नम्याशाल

मनाविती। नागिनी, नजितगिना, नयवावध (धवधि) ॥ १४८ ॥ लाक्य
सूलकिवन्धा, लालकलालमाहिनी। लीलावनी, लिङ्गलूमि, लोकलाव
नचद्विती ॥ १४९ ॥ लख्यवकलनरी, लयवगललवकग, लस्यक
नजहंसा, ललितालयन, निमा ॥ १५० ॥ लाक्य, लोक, लीला, लाकी, न
य (धवधि) ॥ लाक्ययहिता, लाका, लक्ष्मी, लक्ष्मलक्षिता ॥ १५१ ॥ लीला
लक्षितनिर्वाला, लावधमृगवधिता। वधमनरी, वासवां, वध्या, वधत
पनिहानिती ॥ १५२ ॥ वासुदेवाधि, नगध्वी, वदिवजानिवाविती। शु

तावतीशुद्धला, ॥ कि० ॥ नववत्सु ॥ ११५ ॥ धूलिनीरेधववया॥
 भीमलामृगवाहिनी ॥ तावतीहीनवती ॥ अषिता ॥ अषिकिस्त्रिषा ॥
 ११६ ॥ अमयागिवदादिष्टा, अनजन्मयसू ॥ अवा ॥ कि० ॥ अकाविमला
 अमस्त्रिस्त्रिमा ॥ ११७ ॥ अमयमनमान्नी ॥ अतिक ॥ महाधिया ॥ अ
 दिष्टविकनी ॥ अषितायिपदाहवा ॥ ११८ ॥ धीविवासायति ॥ अ
 दाधीमनीधी ॥ अशुद्धता ॥ अविद्या ॥ अलाकार ॥ अतानन्दा ॥ अतिमुनि ॥ ११९
 ॥ अविमनय ॥ अवनी ॥ अम्वनी ॥ अविनिनी ॥ अमान ॥ अधनी ॥ अका ॥ अशुद्ध
 अ २

तथैविमुगा ॥ १२० ॥ लानिनील ॥ अलाद्या ॥ अविवाहानगर्त ॥ असी
 नीयचत्रिप्राय ॥ अकिर्त ॥ अषपातका ॥ १२१ ॥ अमले ॥ अथयसम्यन्ता ॥ अ
 अतिवियिनी ॥ अदताहलिसलिला ॥ अयनचनदी ॥ अता ॥ १२२ ॥ अ
 निदनाचसनसा ॥ अषतासदौनेरिका ॥ अविधू ॥ अर्वद ॥ अषी ॥ अर्वया
 अिमहावर्ध ॥ १२३ ॥ अयासिद्धि ॥ अतासुकि ॥ अन्दस ॥ असनसुती ॥ अ
 सम्यकनमिस्त्रया ॥ अमो ॥ अलिकताम्यदा ॥ १२४ ॥ अर्थदा ॥ अरुदासो
 अ्या ॥ अषी ॥ अयदायिनी ॥ अर्जनि ॥ अवितासु ॥ अम ॥ अलासु

अजला ॥ १०६ ॥ समुद्रसूत्रगीसुखी सर्वपातकवेनिनी। सुतायदु
 निनीसीतासंसावाचिननठिका ॥ १०७ ॥ सोलायसुन्दरीसुखी सर्व
 सानसमन्विता। हनयियादधीकगीहसुखादिनमयी ॥ १०८ ॥
 दतायसंवाहिनकदलाहलायनरुदत्त। दकादक्षिपदाहादाह
 कानादुदयदमा ॥ १०९ ॥ हिमाचलसुगारुमी, दधीकधयदाहवा।
 काम्यनामि ४ कामाधनाकिंतिरुषादिमिथित ॥ ११० ॥ कमदादा
 लिनीथीया, ददविडावलीदमा ॥ ॥ कचडवाव ॥ ६० तिनाममः
 सुहयदिगमया ४ कलगाहव ॥ १११ ॥ कारुणित्वानन ४ सम्यक्

या. क. ३

नगास्त्रानरुलंरुवेन। सर्वपापपदमनं सर्वविघ्नविनाशनं ॥
 ॥ २ ॥ सर्वस्वायज्याकेष्टं सर्वपावनपावने। दद्यान्निशुकरल
 दं, वडवन्नेसमृद्धिदग ॥ ११३ ॥ सर्वजवाध्रानि, ऊककडुल
 मन्। सर्वतीर्थेषु ४ स्नान ४ सर्वयज्ञदीक्षित ॥ ११४ ॥ तस्मै
 हसमद्विष्ट, विकालप्र० नाधनन्। सर्वत्रमयत्यर्थं सम्यक्
 धुमवातव ॥ ११५ ॥ नरुलसमवाध्रानि, निर्वर्धनियत ४ य० न। स्न
 नकालय ० यस्तु, ययकजलाधाय ॥ ११६ ॥ गणसंनिहितान्ननं,

क. ४

गीगविषयगममना। ध्ययार्थलिरुत। ध्यया, धनार्थलिरुतधने॥१६॥
 कामीकामानवाप्राप्तिमाकाशमिदमाध्यागविवर्तिकाहजय
 नाकुदयधुविमानसु॥१७॥ अउकालातिगमना, दयगुय
 एवाकुवत्। नाकाले मनेनकस्य नानि वीनादिसाधसु॥१८॥
 नामोसहस्रगंगया, धाजपकुदयामने। गंगनामसहस्रगु
 ह्याममोक्तनवजन्तु॥१९॥ कार्यसिद्धिमवाप्ताति, निर्विघ्नो
 हमाविष्यत्। निधिवानकयोगनानदायध्वरुवहदा॥२०॥

यदाजह्यावज्जन्तु, सुखीयमानननन॥ अयनावायजन
 न, सुखीयवनागनी॥२१॥ जमाननसहप्रय, यथापीसम्यग
 जिते। गंगनामसहस्रस्य, जवनकल्लयवजन्तु॥२२॥ वक्रधाम
 यप॥ सुखीयवजन्तु, लयग॥ गत्सुथानीकल्लका, माह्लावि
 हलाताथा॥२३॥ विष्ठासुधातीगनद॥ कधामिगुधातक॥ अह
 निदा। गवधकना, सुनदयाप्रदानक॥२४॥ महायातकयका
 वासुयका, यदयातक॥ मन्त्रतयाजह्या, गंगनामसहस्र

कौ॥१७७॥आधियाधियनिदिक्का,धानमाययनिमुनशाम्चतस
 र्वद॥१७८॥सुवस्यास्यानकीरुनात्॥१७९॥सम्बत्सनेयकात्
 प०नृत्किपयाय०अरुपिगालसुसिद्धि,सर्ववापेप्रमचन
 ॥१८०॥संसेयाविकरिहस्य,धर्मविद्विहस्यिवादीहिकस्यापि
 हिंस्रस्य,वेनाधर्मयनेरुवत्॥१८१॥वकुपिमपथानसु,काम
 आधिविद्विहिनशायत्तुल्लल्लनशानी,तदाप्राप्तस्यकीरुनात्॥
 १८२॥गायत्रायनजाधन,यत्तुधर्मसम्याङ्गिनी,सुहृत्य०नत०स

म्यक्तद(गर्भमवाप्रयाग्या॥१८३॥गदित्वावदविद्वध,यत्तुधर्मल
 लनरुनी॥तत्तुधर्मसम्यगार्यामी,सुवनाजसुहृत्तुवाग्या॥१८४॥युन
 सुधुषर्षकव्यावकीर्वननालमशायत्तुधर्ममर्जथल्लुक्कवर्षति
 प्रवत्तप०नृ॥१८५॥वदयात्रायत्तुधर्म,यदप्रयनियधन,तत्तुधर्म
 सनल्लन,यिसंधीयनिकीरुनात्॥१८६॥गंगयासुवनाजस्यप्रय
 हपनिगीसुनात्॥गिवरुकिमवा,प्राति,विष्णुकोधवारुवेत्॥१८७॥
 ग॥य०कीरुयदनदिनी,गंगनामसुहृत्तुकी,तत्तुमीधसुहृत्तुगीर्ग

ददी सुदारुवत् ॥ १२७ ॥ सर्वं यद्गुणं रुचति, सर्वं यद्विजयी रुचत् ॥ सर्वं
यस्य स्वमाप्नोति, जायते वीर्यमाय ० त ॥ १२८ ॥ सदा यात्री सचि क्रय
१ सुष्ठु विष्णुसदेवादि । कृत सर्वसुना च १ सु, कीर्तयेय ० मस्ति मि ॥ १
२६ ॥ गस्ति सु फ न थ रु का, जायते वीर्यमाय ० त ॥ १२९ ॥ सर्वं यद्गुणं
न र्गमत्कृतमस्य ॥ १३० ॥ सुवनाजमि म ग म ग म या य ० त ॥
वाय ० त ॥ १३१ ॥ अवयव दयत रुकात्, दन्त लाल विवर्जित ॥ १३२ ॥ मयः
न पि विवे ० या ० म न वा को य स रु व ० त ॥ १३३ ॥ या य मा म न पि

हृत्मा च प्रिया रुचत् ॥ १३४ ॥ सर्वं देव प्रिया ० त ॥ १३५ ॥ सर्वं विगदसीम
न ० त ॥ १३६ ॥ विमानमानरु, दिवसु ० त ॥ १३७ ॥ दिव्या रुचत् ॥ १३८ ॥
मन्त्रा, दिव्या गसमन्त्रित ० त ॥ १३९ ॥ नन्दना दिवने ह्वे न देव वत्स्यमाद
न ॥ १४० ॥ ॥ १४१ ॥ ॥ १४२ ॥ ॥ १४३ ॥ ॥ १४४ ॥ ॥ १४५ ॥ ॥ १४६ ॥ ॥ १४७ ॥ ॥ १४८ ॥ ॥ १४९ ॥ ॥ १५० ॥
महामन्त्र, विदुषा रुचि काम ० त ॥ १५१ ॥ ॥ १५२ ॥ ॥ १५३ ॥ ॥ १५४ ॥ ॥ १५५ ॥ ॥ १५६ ॥ ॥ १५७ ॥ ॥ १५८ ॥ ॥ १५९ ॥ ॥ १६० ॥
वन्मा च कदा ० त ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ ॥ १६३ ॥ ॥ १६४ ॥ ॥ १६५ ॥ ॥ १६६ ॥ ॥ १६७ ॥ ॥ १६८ ॥ ॥ १६९ ॥ ॥ १७० ॥
२०१ ॥ ॥ २०२ ॥ ॥ २०३ ॥ ॥ २०४ ॥ ॥ २०५ ॥ ॥ २०६ ॥ ॥ २०७ ॥ ॥ २०८ ॥ ॥ २०९ ॥ ॥ २१० ॥

ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २०४ ॥ एतस्मिन् पृथग्यत्नं लिखितं य
 नियुक्तं भगवता परमेश्वरात्किं पुनरित्युच्यते सदा ॥ २०५ ॥ अगस्त्यः
 किं वदन् केन गृह्यमनिश्चितं वदति संसेयानां कर्तव्यं सदा
 यन्निरुद्धं न हि ॥ २०६ ॥ यावन्निमलं ह्यस्मात्प्रापि मलज्जालान् यन्न कल
 भगावन्ति सुवनाजस्य रश्मिभ्यश्च स समानित ॥ २०७ ॥ यावद्भक्तमजय
 यमुन्नाम्नामगस्त्यं वदन् । सकाकटस्त्वपि मृगान् यूनर्हन्मा विष्ण
 र् ॥ २१० ॥ नित्यं नियमवान्न गथाजयस्मात्पुनरुर्मन् । अन्यथापि विप

[illegible]

॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

Handwritten text in Devanagari script on a palm leaf manuscript, showing a single line of text.